राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 86 15 जून 2004

सदस्यता शुल्क : ——————— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू	26
3.	आगामी मास के सत्संग	26
4.	एक दृष्टांत (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	27
5.	अनमोल वचन	28
6.	ज्ञान-सार	28
7.	सत्संग सार	29
8	सतगुरु कृपा	31

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : **01664-241570** (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- **www.radhaswamidinod.org**

इ-मेलः- **info@radhaswamidinod.org**

बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग

भिवानी कैसेट क्रमांक..... 95

दिनांक 4.10.92

समय ..... प्रातः

राधास्वामी ! राधास्वामी दयाल की दया !!

राधास्वामी सहाय !!! राधास्वामी !

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! ये स्वामी जी महाराज की वाणी है। यह सार वचन का शब्द है।

गुरू मोहे दीजे अपना धाम।।

वह सतगुरू का धाम कौन सा है? सतगुरू के धाम में पहुंचने से पहले बड़े—बड़े झमेले हैं। जीव का कोई पता ही नहीं कि कहां अटक कर खड़ा हो जाए। सतगुरू का असली धाम तो राधास्वामी धाम ही है। निचले तो गुरूओं के धाम हैं। कहीं गुरूओं के धाम हैं और कहीं ऋद्धियों के धाम हैं। कहीं सिद्धियों के धाम हैं। कहीं करामातों के धाम हैं। ये न्यारे—न्यारे धाम हैं। आप समझते हो? इसी कारण से हमारे देश में हिन्दुओं में ज्यादा मत मतांतर बन गए। क्योंकि वे पहली मंजिल को भी धाम ही समझ बैठे। फिर वे जाएं तो कहां जाएं? पहली मंजिल को ही धाम समझ लिया और जो धाम था वह रह ही गया। तो सुरत कहती है कि **गुरू मोहे दीजे अपना धाम।** कि मैं तेरे में से ही निकल कर आई थी। तू ही मेरा सब कुछ है। मुझे अपना वह धाम दे दे। मेरी जो गलती थी उसकी सजा मैंने भोग ली है। अब तो दया कर और मुझे अपना वह धाम दे दे। राधास्वामी धाम ही तो वह धाम है। वह बड़े से बड़ा धाम है क्योंकि वह सारी ही दुनिया की जान है। वह सब

का कर्ता है। आप कहोगे—आप उस धाम को कैसे समझाओगे? अब आप ही देख लो उसे किस तरह समझोगे। मैंने तो ये बातें कई बार बताई हैं। जैसे गंगोत्री, जमनोत्री से धारें निकलती हैं वे बड़ी पवित्र होती हैं। असली धारें तो वहीं से निकलती हैं। उससे परे और भी कोई हों तो मुझे तो पता नहीं है। मैंने तो यही सुना है। जब गंगोत्री की धार नीचे उतरती हैं तो पहले वह बदरीनारायण में आती है, फिर ऋषिकेश और हरिद्वार में आती है। कनखल में होती हुई, नीचे आ जाती है। वही धार हमारे खेतों में आकर पानी देती है। पर उस धार की क्या कद्र रह जाती है? अगर वही धार विनती करे तो सोचो कि वह किस से विनती करेगी? जहां से धार आई थी वही धाम वह वापिस लेना चाहती है। तो उस धार को शब्द ही समझो। वह शब्द ऊपर से उतरा। नीचे उतरता हुआ आया। उसकी जितनी पवित्रता ऊपर थी वह नीचे आकर खत्म हो गई। वह नीचे घटते—घटते कैसे घट गई? पहले स्थान पर तो वह एक ही था और वह पवित्र था। जब नीचे उतरा तो दो बन गए और नीचे आकर तीन बन गए। फिर बनने की कोई सीमा ही नहीं रही। तो महात्मा कहते हैं कि गीता की औलाद फैल गई (गीता ब्या गई) नीचे तीन बने और दो पहले थे ही। अब तीन और बन गए। चौथी गायत्री हो गई। उनमें से कहते हैं वे ब्रह्म के अवतार थे। वे अवतार भी बन गए। फिर देवी—देवता भी बन गए। आप लोग उन सब की पूजा करते हो और आगे जाकर घरों के पित्तर भी बन गए। असली पित्तरों को तो हम भूले बैठे हैं। मैं एक बात कहा करता हूं। मेरी यह बात है बड़ी कठोर। पर मैं आप लोगों को सच्चाई बताता हूं। जो अपने मां—बाप की सेवा नहीं कर सकता है वह भक्ति नहीं कर सकता है। सात जन्म तक भी, वह भक्त हो ही नहीं सकता। अगर मेरी यह बात गलत हो तो कोई तो बताओ कि मां—बाप को धक्के मार कर कोई महात्मा बना हो, कोई भी नहीं बन सकता है। अगर

कोई किसी का नाम लेकर बता दे तो मेरा मुंह भी नीचे हो जाएगा। पर ऐसी बात किसी को मिल ही नहीं सकती है। मैं जो बातें कहता हूं बड़ी सोच कर कहता हूं। इसीलिए अपने धाम में पहुंचना है तो वही बात आ जाती है कि अपनी लाइन को पवित्र करो। अपने मां—बाप की सेवा करो। जो अपने मां—बाप से घणा करता है उसका जन्म वथा चला जाता है। आपने सुना है कि **मां हो जारणी तो पुत्र को नहीं विचारणी।** उसको तो अपना खून देकर ही पाला है। अपने मां—बाप की सेवा करने वाला बड़ा भारी भागी होता है। कई मां—बाप भी नालायक होते हैं। जैसे कई भाई कह भी देते हैं। तो फिर क्या बात हुई? नालायक हों तो पड़े रहें। तुम अपना फर्ज पूरा करो अगर तुम्हें अपना रास्ता सुधारना है तो। मेरे मुंह से ये बातें निकल गई जो आपको बताई। ये गलत तो नहीं होंगी कि जो अपने मां—बाप से घणा करता है वह भक्ति नहीं कर सकता है? ऐसा कभी कोई भक्त नहीं हुआ है। मां—बाप का आर्शीवाद शुरू से ही चलता आया है।

बात चली थी कि **गुरू मोहे दीजे अपना धाम।** वह धाम कौन सा है? जैसे मैंने आपको बताया कि वह धारा चली थी, गंगोत्री से। ज्यों—ज्यों वह नीचे उतरती गई उसकी कद्र थोड़ी—थोड़ी घटती चली गई। जब उनका खेतों में पानी लगना शुरू हो गया तो उसकी कुछ भी कद्र नहीं रही। इसी तरह जब वह धार (रूह) अपने आप को देखती है तो धार कहती है कि मेरी तो बेकद्री हो गई है। तब वह शब्द को कहती है कि **गुरू मोहे दीजे अपना धाम।** अपना धाम मुझे दे दे। मैं वापिस वहीं जाना चाहती हूं। तो इस तरह से सुरत कहती है। क्योंकि पहले तो इतनी अधिक पवित्र थी कि उसका ठिकाना ही नहीं था। यह भी आप को पता है कि युग युगान्तर से ही पवित्रता में अंतर आता रहता है। सतयुग में तो बड़ी भारी पवित्रता थी। फिर यह पवित्रता थोड़ी—थोड़ी घटती

चली गई। त्रेता और द्वापर में थोड़ी–थोड़ी घटी। कलयुग में तो बिल्कुल ही कम हो गई। क्यों कम हुई? इसीलिये कि हमारे धर्म का घटाव होता चला गया। पाप बढ़ता चला गया। सो तब ये सुरत दुखी होकर कहती है कि **दीजे, अपना धाम।** यह जब शब्द का सहारा लेकर चलेगी तो कौन–कौन से धाम पकड़ेगी? आपने देखा है कई आदमी देवी–देवताओं की पूजा करते हैं और फिर बूझा–करने लग जाते हैं। वे उसी धाम में रह जाते हैं। यह तो सतगुरू का धाम नहीं है। अगर कोई भागी पहले स्थान से भी निकल जाता है तो उनमें बड़ी–बड़ी करामातें आ जाती हैं और वही उनका धाम बन जाता है। उसी में बस अपना खेल करना शुरू कर देते हैं। उसी धाम में रह जाते हैं। पर सुरत इन धामों की तो नहीं है। वह तो कहती है कि **सतगुरू दीजे मोहे अपना धाम।** यह सतगुरू का धाम नहीं है। यह स्थान तो गुरूओं में है। कोई देवियों और कोई भैरों को गुरू मानता है। कोई पीर को, कोई किसी और को। वे वहीं अटक जाते हैं। जब कोई उनसे आगे निकलने की कोशिश करता है तो उन्हें आठ सिद्धियां और नौ निधियां रोक लेती हैं। काफी लोग उनमें फंस कर उन्हें ही अपना धाम समझ लेते हैं। उन धामों में अटक जाते हैं। उस खुद के धाम का पता कौन दे? अगर कोई काबिल महात्मा संत सतगुरू आ जाए तो उसका पता दे देते हैं कि वह गुरू का धाम कहां है? वह तो सतखण्ड से आगे है। वहां चलो। राधास्वामी धाम में पहुंचो तब वह गुरू का धाम मिलेगा। सतगुरू किसको कहते हो? वह सतगुरू तो एक ही है। वह सारी दुनिया का कर्ता है। कुल का खाविंद एक है। गरीबदास जी ने भी कहा है। इसी तरह अन्य संत महात्मा भी कहते हैं। सारी दुनिया का कर्ता एक है। वह सतगुरू है।

शब्द गुरू चित्त चेला और संतों ने दिया हेला।

शब्द गुरू है और चित्त चेला है। पर जब तुम अपने चित को

उस गुरू के चरणों में लगा दोगे, तभी तुम्हारा उद्धार होगा। तब तुम उस गुरू को पा लोगे। कोई तो ऋद्धियों–सिद्धियों से भी आगे निकल जाता है। वह कह देता है कि नहीं, गुरू का धाम तो आगे है। कुछ स्वर्ग वैकुण्ठों के आनन्द में ही रह जाते हैं। उसी को बड़ा धाम मान लेते हैं और फिर कहते हैं कि इससे बड़ी भक्ति तो कोई भी नहीं है। आपको पता है कि सतलोक से नीचे जितने भी हैं, सभी अपनी–अपनी ही भक्ति बताते हैं। कहते हैं कि इससे बड़ी तो कोई भक्ति है ही नहीं। सभी एक ही बात कहते हैं। जब गुरू के उस धाम में पहुंचोगे तभी काम चलेगा। वह गुरू का धाम अठारहवीं मंजिल पर है। वह निर्गुणियों का देश है। वहां न पाप है और न पुण्य है। वहां का गया वापिस नहीं आता है। जैसे सांभर के खेत में जो भी कुछ पड़ जाता है वह सांभर ही बन जाता है। वापिस अपना रूप प्राप्त नहीं कर सकता है। सभी चीजों का नमक बन जाता है। उस खेत में जो भी वस्तु डाल देंगे उसी का नमक बन जाएगा। सो उसी तरह जो कोई उस शब्द में पहुंच जाता है वह शब्द का ही रूप बन जाता है। उसी में से हम आए थे। इसी के ऊपर कबीर साहब की कई अच्छी वाणियां हैं। जो लोग उन्हें समझ जाते हैं। वे सीधे रास्ते पर चल पड़ते हैं। कबीर साहब ने बहुत ही अच्छी बातें कही हैं। हम कबीर का नाम क्यों लेते हैं? क्योंकि वे पहले संत और पूर्ण पुरुष थे। उनसे पहले कोई भी संत नहीं आया। वे चारों युगों के संत हैं। पर मैं कहता हूं कि आज वे कबीर पंथी उस बात से चूक गए हैं। मैंने कभी भी धोखे की और घटिया बातें नहीं कही हैं। मैं धड़ाके से कहता हूं कि काफी लोग ऐसी बातें कह देते हैं। एक दिन चाचा साहब ने चिट्ठी दिखाई। इन्होंने कहा–एक महंत की चिट्ठी आई है, देखो। मैंने कहा–क्या है? इन्होंने पढ़ा–मैं खुद ही वक्त का कबीर प्रगट हो गया हूं। मैंने कहा–नहीं, उसे लानत है। आगे इन्होंने पढ़ा–उसके चार पांच

बच्चे भी हैं। मैंने कहा—फिर तो जरूर ही पूरा कबीर है। मैंने कहा—आप मुझे तो जाने नहीं देते। मैं तो पूरा पता लिया करता हूं। मैं मिलने के लिये बहुत जाया करता हूं। मैंने बहुत देखे हैं। इन्होंने कहा—आप क्या करोगे? मैंने कहा—उसको सूई चुभो देना। अगर खून आता है, तो समझ लेना कबीर नहीं है। अगर दूध आए तो कबीर है। बस इतनी सी बात है और कुछ नहीं। बच्चों की तो कोई बात नहीं। बच्चे तो पैदा कर लिये होंगे। पर पहले तो वह डूब गया कि कबीर कहते किसे हैं, उन्हें यही पता नहीं है। वे तो पापी हैं, झूठे कबीर बन जाते हैं। वे झूठे ऋषि दयानन्द बनते हैं। करणी करो तब जाकर बनोगे। काफी लोग झूठे ही कह देते हैं कि वह तो खुद स्वामी जी महाराज आए हैं। वे पापी हैं। स्वामी जी क्या भूत बने फिरते हैं? स्वामी जी तो अपना काम करके चले गए। वे जीवों को उबारने के लिए ही आये थे। हां यह बात जरूर है उन्होंने जो शिक्षा दी है उसको तुम कुछ भी समझ लो। वह शिक्षा ही सारा काम करती है। जो जैसा काम करता है वैसा ही बन जाता है। कब? जब उनका शब्द खुल जाता है। शब्द की कमाई करने वाला शब्द का ही रूप बन जाता है। जब शब्द का रूप ही बन गया उसे कुछ भी कह सकते हैं। उसका काम पूरा बन जाता है। सो थोड़ी बातें आप लोगों को बताईं। ये स्वामी जी की वाणी थी। इन्होंने कहा—**गुरू मोहे दीजे अपना धाम।** उस धाम को बहुत से नहीं समझते। क्योंकि बहुत से तो थोड़ी दूर चलते ही अपना धाम बनाकर बैठ जाते हैं। कोई आंखों का गुलाम है। कोई नाक का गुलाम है। कोई जुबान का गुलाम है। कोई दूसरी इन्द्रियों का गुलाम है। गुलामी में पड़कर अपना—अपना धाम बना बैठते हैं। असली धाम कहां है? आपने स्वामी जी महाराज की वाणी पढ़ी होगी।

विषयन से जो रहे उदासा।
परमार्थ की जा मन आसा।।
धन संतान प्रीत नहीं जा के।
जगत पदारथ चाह न ता के।।
विरह बान जिन हिरदे लागा।
खोजत फिरै साध गुरू जागा।।

कबीर साहब ने बड़ी अच्छी बातें बताई हैं। वही स्वामी जी ने बताई है। स्वामी जी महाराज कभी भी आगरा से बाहर नहीं गए। कबीर साहब ने तो अपने जमाने में बड़ा घूम—घूम कर सत्संग किया। बस, इसी बात पर कबीर के वक्त पर काल की झपटी लगी थी और वही झपटी स्वामी जी के वक्त में भी लगी और तो किसी के भी वक्त में नहीं लगी। मैं तो उनकी बातें सुनकर ही ये बातें बताता हूं। कबीर साहब का जो शब्द था, वही शब्द आज भी काम कर रहा है और वही शब्द चारों युगों में काम करता रहेगा। वही स्वामी जी महाराज का शब्द मार्ग है। आप लोग कहोगे—आप कबीर पंथियों की निंदा क्यों करते हो? कबीर पंथी हैं कौन? बुझे हुए दीपक से दीपक नहीं जलते हैं। समझते हो? सब रोजगारी बने बैठे हैं। सभी पाखण्डी बन गए हैं। राधास्वामी मत वालों में भी पाखण्ड आ गया है। राधास्वामी नाम को छोड़कर कोई सोहम् का उपदेश भी देने लग गया है। वे गिर गए हैं। कोई कुछ बताने लगे और कोई कुछ। इनमें भी गिरावट आ गई है। किसी ने तोड़—मरोड़ करके कुछ और ही बना लिया। सो इनमें भी गिरावट ही आती जा रही है। ये गिरावट क्यों आई है? क्योंकि सारे ही रोजगारी बनते जा रहे हैं। जहां रोजगार है, वहां भक्ति नहीं है। भक्ति कहां है? दुर्जनपुरा गांव में एक महात्मा था। वह कहा करता था—

नफा मिले त्यागण में, संग्रह में होती फनां फनी।

अगर त्यागना सीख लोगे तो कुछ न कुछ कर जाओगे। अगर

त्याग नहीं है तो कुछ भी नहीं कर सकते हो। त्याग जो करेगा, वही कुछ कर सकेगा। कई मेरे प्रेमी भी सत्संग करने लग गए। मेरा ही एक प्रेमी दूसरे प्रेमी से कहने लगा कि क्या तू सत्संग आगे चलाना चाहता है? उसने कहा—हां। तो उसने बता दिया कि फिर तो तू संगत के चार पैसे न बरत लेना। तेरा सत्संग चल जाएगा। पर ये बात कौन मान सकता है। कहते हैं—

साधो ! लालच बुरी बला।

उस लालच ने उसको कूंवे में डाल दिया। अब बताने वाले की भी कोई बात नहीं समझते। कौन किसी की मानता है? मैं आप लोगों को कहता हूं कि आप कुछ भजन व सुमरन करना सीखो। त्याग भी सीखो। त्याग है तो सब कुछ है। हम लोगों को ऋषि—मुनियों ने कोई भी गलत बात नहीं बताई है। पर हम उन बातों पर चलते नहीं हैं। उन बातों को भूल गए हैं। हम गलती में पड़ गए हैं। नामदान देने के बाद एक प्रेमी ने मुझ से बात की। उसने कहा—महाराज जी! आपने एक बात बताई थी। मैंने कहा—बोल। मेरा दरबार तो खुला रहता है, पूछने वालों के लिए। पूछो क्या है? मैं उसका निर्णय कर दूंगा। उसने कहा—आपने बताया कि पार्वती जी को शिवजी ने जब ज्ञान सुनाया। तब उन्होंने 12 कोस तक जानवर नहीं रहने दिए। मुझे यह बात समझा दो। मैंने कहा—मैं अकेले को तो नहीं बताया करता हूं। मैं सत्संग में ही बता दिया करता हूं। मैंने बहुत कुछ तो इसी बात में बता दिया। **गुरू मोहे दीजे अपना धाम।** अगर कोई समझने वाला हो तो। अगर न समझने वाले हैं और कोई तर्क वितर्क करे तो बात यही थी कि शिव जी ने कथा सुनाई और पार्वती ने सुनी। अब पार्वती कौन है? और ये शिव जी कौन है? कथा कहां सुनाई जाती है? कौन सुनता है? कौन सुनाने वाला है? हुंकारे कौन भरता है? बड़ी लम्बी चौड़ी मिसाल है, अगर आप अंतर में अभ्यास करके

चलोगे तो। इस शिव जी को किसने देखा है? गीत जरूर गाते हैं कि हमने देखा। हमने देखा। किसी ने देखा? कई लोगों से बातें होती हैं कि राम—नाम बहुत बड़ा है। कितना बड़ा है? कि तुलसी के पत्ते पर लिखकर तराजू के पलड़े में रख दिया तो सब कुछ ही तोल दिया। वह पत्ते का पलड़ा तो उठा नहीं। आज भी तो वही राम नाम लिखकर तराजू के पलड़े में लिख कर तुलसी का पत्ता रख दो। देखते हैं कि पलड़ा उठता है या नहीं। फिर सब यही कह देंगे कि वह तो वक्त ही और था। तो फिर राम को बड़ा मत कहो। फिर तो वक्त को ही बड़ा कहो। आप लोगों को एक चीज तो माननी ही पड़ेगी। या तो राम को बड़ा मानो या वक्त को बड़ा मानो। अगर राम ही बड़ा था तो आज भी लिखकर रख दो। अगर वक्त ही बड़ा है तो राम को मत मानो। यहां आकर सब के सब चुप। कई कहते हैं—

वैश्या, सूवा पढ़ावत तिर गई।

आज भी वैश्याएं तिरती हैं। पर ये लोग बता नहीं सकते। वैश्या सूवा पढ़ाते तिरी है। कहते हैं कि वह वेश्यापन करती थी। फिर वह कैसे तिरी? उसका तोता राम—राम बोला करता था उसे ही सुनकर तिरगी। फिर तो आज तप करने की जरूरत नहीं है। न होम—यज्ञ और पूजा की जरूरत है। आज भी एक तोता पाल लो। खोटे कर्म करने वाले सभी उस तोते को राम पढ़ाने लग जाओ। बस तिर जाओगे। कोई भी उस तोते या सूवे को नहीं समझा। वह वैश्या कौन है? सच पूछा जाए तो वह तो तुम्हारी सुरत ही है जो सतखण्ड से आई है। जब ये नीचे उतर कर विषय विकारों में फंस गई तो इसने वैश्या का रूप धारण कर लिया। जब कोई महात्मा सतगुरू मिल जाता है जैसे तुलसी दास जी का नाम लेते हैं तो वह उसका रूप बदल देता है और इसे कहता है कि तू बदल जा। तब वह सुरत अपने रूप को बदल जाती है। उस

वक्त वह सूवा, जो अज्ञानी मन है, वह उसके हुकम में आ जाता है। यह मन अज्ञानी था। यह काल का एजेन्ट है। इस सूवे को पढ़ाने लग जाते हैं। यह जो सूआ है इसी को शुकदेव जी कहा जाता है। **सूवा पढ़ावत गणिका तारी, तारी मींरा बाई।** तो वह सूवा पढ़ाते—पढ़ाते यानि उस मन को समझ आ जाती है और यह मन राम के गुण गाने लग जाता है। उस धुनि को पकड़ लेता है। ज्यादा मुझे हिन्दी की चिन्दी भी बनानी नहीं आती है। मैं सीधी बातें आपको बता देता हूं। जब इसको पूरा ज्ञान हो जाता है मन फिर अपनी बुरी आदत को, बात को छोड़ देता है और वह अपने घर चला जाता है। यही मन हमारा दुश्मन भी है और यही हमारी मदद भी करता है। मदद तो तब करता है जब यह हंस बन जाता है। दुश्मन तभी बनता है जब यह नीचे विषय—विकारों में उतर आता है। अब मैं तुम्हारे शास्त्रों का हवाला देकर बताता हूं कि यह दुश्मन कैसे है। जिस जगह पर मन की बैठक होती है जीव को उसी जगह से निकलना पड़ता है। मन न्यारी वस्तु है जीव न्यारी वस्तु है। दस प्राण न्यारी वस्तुएं हैं। पांच तत्व न्यारे हैं। चार अन्तःकरण न्यारे हैं। तीन गुण न्यारे हैं। ये सब इस जीवात्मा से न्यारे हैं। फिर भी यह मन काबू में आ जाता है और जब यह ऊपर चलता है तो अपनी बुरी आदतें छोड़ देता है। आपने सुना है—

पहले यह मन काग था, करता जीवन घात।
अब यह हंसा भया, चुग चुग मोती खात।।

यही मन हमारी मदद करनी शुरू कर देता है। यह पिंड को छोड़ कर ऊपर चला जाता है और उस सुरत की मदद करता है। फिर घबराना नहीं चाहिए। इसीलिए अभ्यास करते—करते ऊपर जाओ, यही बात उस वक्त शुकदेव जी के साथ थी। वह शुकदेव जी कौन हैं? बारह कौस बताई है तो वे इस शरीर की बारह मंजिलें हैं। छः पिंड की और छः ब्रह्मंड की। पार ब्रह्म का निर्णय

किसी ने नहीं किया है। इन 12 मंजिलों को तय करके सुरत जाती है। इसे कहते हैं कि सुरत शब्द को सुनती है। तो ये बारह कोस मैंने जो बताई हैं खाली हो जाती है। इतनी चीजें हैं—25 प्रकतियां, 10 इंद्रियां और चार अन्तःकरण हैं, कितना ही झमेला है। सभी को यह सुरत तय कर जाती है। उड़ने का मतलब यह नहीं है कि हाथ मारते ही वे सारे पक्षी उड़ गए। संतों का मार्ग यह है कि बारह मंजिलों में जितनी भी बीमारियां मिलती हैं उन सब को अभ्यास करके पीछे की तरफ छोड़ जाते हैं। उनको उड़े समझो क्योंकि उनकी ताकत तो खत्म हो जाती है। यह उड़ना है। जब बारहवीं मंजिल पर पहुंच जाते हो तो सारे ही नीचे रह जाते हैं। बारह कोस तक जानवर न रहने का यह मतलब है। उस जगह जाकर ये कहते हैं कि शुकदेव जी किससे हुआ है? यह ब्यास की धर्म पत्नी से हुआ था। अब वह ब्यास कौन है? जिन्होंने विषयों को त्याग दिया है वही ब्यास है। जो विषयों को त्याग देते हैं उनमें वह शक्ति आ जाती है। वह शक्ति ही उसकी धर्म पत्नी है। शक्ति में ज्ञान पैदा हो जाता है। उसे शुकदेव जी कहते हैं। पहले ये मन अज्ञानी था। फिर इसमें ज्ञान आ जा जाता है। जब यह ऊपर के पिंडों में पहुंचता है तो यही उस सुरत का साथी बन जाता है और उसी में समा जाता है। जैसे हजारों नाले एक दरिया में समा जाते हैं। इसी तरह न्यारी—न्यारी पुड़चलें (अंकुर) एक उस सुरत में समा जाती हैं। उसी से ये सब निकले थे और उसी में समा जाते हैं। अब किसी के दिल में हलचल भी हुई होगी कि हमें तो ये बातें जंची नहीं हैं। जब सूर्य छुपता है, सारी किरणें और उनकी तेजी उस सूर्य के साथ ही छुप जाती है। जो दीया तुम फूंक मार कर बुझाते हो, उसकी लौ कहां चली जाती है? उसकी रोशनी कहां गई? वह सब उसी के अंदर ही समा जाती है। जो आग उसमें थी वह खत्म हो जाती है। इसी तरह ये भी सब उस धार में समा जाते हैं। इस

तरह से वह परमात्मा जो सारी दुनिया का कर्ता है वह कुलमालिक राधास्वामी दयाल है। यदि राधास्वामी दयाल से मिलने की कोशिश करो तो तुम इस धर्म को पकड़ कर शनै—शनै ऊपर चढ़ जाओ। कबीर की बातें बताईं थी कि वे मंजिलें—मंजिलें जा पहुंचे थे। यह मैंने आपको मंजिलों का भेद बताया है।

जो मां—बाप की सेवा नहीं करता है वह सात जन्म भी भक्ति नहीं कर सकता। जिसने अपने मां—बाप को ठुकराया है और वह साधु बन गया है। उसका तो जीवन ही बर्बाद हो जाता है। जिसने भक्ति की है पहले इन तीर्थों की पूजा करके ही भक्ति की है। ये गुरू सतगुरू से भी बड़े तीर्थ हैं। इनकी पूजा करना ही पहला धर्म है। फिर सतगुरू के पास जाओ। सतगुरू निस्वार्थ होकर बातें बताता है। आप प्रश्न कर सकते हो—उसमें स्वार्थ क्यों नहीं होता है? उसमें स्वार्थ होता है तो वह क्या होता है? वह यही चाहता है कि मेरा शिष्य काबिल हो जाए। सो यह तो कोई स्वार्थ नहीं है। क्या उसने अपना हल जुतवाना है? वह जानता है कि यह बिगड़ा हुआ, कमीना है किसी भी तरह से सुधर जाना चाहिए। यह स्वार्थ नहीं है। यह तो परोपकार है। दूसरों का भला है। सो वे दूसरों का भला चाहते हैं। अपना स्वार्थ नहीं चाहते हैं। अगर किसी ने कोई ऐसा कर्म भी किया है और वह अपने आप ही तोबा बोलता है, माफी मांगता है तो मालिक बेशक बख्श दे, नहीं तो और कोई बख्शने वाला भी नहीं है। मैं आप लोगों के सामने खुला क्यों बोलता हूं? मैंने मेरे बाप की सेवा की थी। अब वह मर गया और अगर इसे अहंकार कहोगे तो कहो, उसका तो कुछ बिगाड़ नहीं सकते हैं। क्योंकि वह तो मर चुका है। अब न तो मेरा बाप आ सकता है और न मेरी सेवा ही वापिस आ सकती है। इसीलिए जो चीज चली जाती है उसके बारे में बेशक बता दो। कोई डर नहीं है। जो रह जाती है उससे बचकर रहना चाहिए। मैं स्वयं को कभी

नहीं कहता कि मैं सतगुरू हूं। मैं तो आप लोगों का सेवक हूं।

आपने भी सुना होगा। कोई लड़की भैंस को पानी पिलाने जा रही थी और रास्ते में कोई महात्मा बैठा था। उसने अपने कटड़े की पूंछ पकड़ कर कहा कि बाबा! तेरी मूंछ अच्छी है या हमारे कटड़े की पूंछ अच्छी है। उसने कहा—बेटी! फिर कभी बताऊंगा। काफी समय गुजर गया। महात्मा बिमार हो गया। जब सुना कि बाबा मरने वाला है वह लड़की आई। लड़की ने कहा—मैंने तो आपसे एक बात पूछी थी और आपने कहा था कि फिर बताऊंगा। मैंने सोचा कि अब पूछ कर आऊं। उसने कहा—बोल बेटी। लड़की ने कहा—आपने वह बात तो नहीं बताई। मैंने आपसे पूछा था कि तेरी मूंछ अच्छी है या हमारे कटड़े की पूंछ? बाबा ने कहा—तेरे कटड़े की पूंछ को क्या आग लगानी है। मेरी मूंछें अच्छी हैं। उसने अपनी मूंछों को हाथ लगाया। लड़की ने कहा—यह बात उस दिन भी कह सकते थे। बाबा जी ने कहा—बेटी ! उस दिन मेरी उम्र बाकी बची थी। पता नहीं क्या हो सकता था। मूंछ तो कभी भी उखड़ सकती थी। सो बढ़ चढ़ कर कभी भी नहीं बोलना चाहिए। पता नहीं कैसा वक्त आ जाये। बस सतगुरू दया रखें। पर जो चीज चली गई है उसके बारे में बेशक बता दो। मुझे याद है—हवा सिंह बहुत अच्छा लड़का है। सत्संगी है। इसका पिता इसके पीछे से बीमार हो गया और इसको बुला लिया। यह दिनोद आया था। उसने कहा—उसे बुलाकर लाओ। मैं अब मरूंगा। मैंने उससे पूछा कि क्या बात थी? हम उसको फूफा कहा करते थे। उसने कहा—मेरी सेवा तो यही करता है और कौन करता है? अब सेवा करने वाले पर तो मां—बाप की बड़ी भारी दया होती है।

सेवा सिद्ध सफलता, सेवा विजय अपार।
सेवा में मेवा मिले, सेवा में करतार।।

जो कुछ भी बनता है सेवा से ही बनता है। सेवा करना

सीखो। कभी किसी को झटका न पहुंच जाए कि हमने तो नहीं की। अगर तुमने नहीं की तो अब कर सकते हो। अब मालिक के आगे तोबा बोलो कि गलती में बनी सो बनी। अब तो आगे के लिए सोचो। समझो। पर मैं यह बता देता हूं कि जानकार को तो ग्यारह गुणा जुर्माना हो जाता है। सो–

जो जान बूझ साची तजे, करै झूठ से नेह।
ता की संगत रामजी, सुपने ही मत देय।।

जिसको सभी चीजों का पता है, फिर भी गुस्ताखी करता है उसको तो खुदा भी माफ नहीं करता है। तीन पापी होते हैं। सबसे बड़ा पापी तो वह है जो बुरा काम करके खुश होता है। दूसरा पापी वह होता है जिसे पाप कर्म करके न खुशी है और न गमी। यह उससे दूसरे दर्जे का पापी होता है। अगर पछताता है, वह तीसरे दर्जे का पापी है। वह मालिक के आगे बख्श दिया जाता है। उसे डरने की जरूरत नहीं है। जो भी पश्चाताप करता है वह बख्शा जाता है। ये मैंने गरीबदास की वाणी से सुना है। अब मैं आप लोगों को शब्द सुना रहा हूं। ये कबीर साहब का शब्द है।

नमो–नमो सतपुरूष को नमस्कार गुरू कीन्ह।
सुर नर मुनि जन साधवां संता सर्वस दीन्ह।।
गुरू की महिमा क्या कहूँ साख भरैं सैं वेद।
बिन सतगुरू नहीं पाइए–अगम पंथ का भेद।।

मैंने एक बार यह दोहा कहा तो एक प्रेमी ने आकर कहा–आप तो नीचे की बात कहते हो। संत तो वेद को मानते नहीं हैं। मैंने कहा–फिर संत यह दोहा कहां से ले आए। क्या उसमें लिखा नहीं है?

गुरू बिन माला फेरते गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दान हराम है देखो वेद पुराण।।

क्या महात्मा यह दोहा नहीं कहते हैं? यह कहां से आया है?

इस दोहे में यही तो कहा है कि गुरू के बिना माला फेरना और नाम लेना वथा चला जाता है। गुरू के बिना बड़ी भारी दुर्गति होती है। सतगुरू तो जरूर ही होना चाहिए। सो कहा है–

पांच तत्व गुण तीन हैं, आगे रे मुक्ति मुकाम।
कहैं कबीर जहं घर किया, गोरख दत्त न राम।।

महरम हो सोए जाणै भाई साधो, ऐसा है देश हमारा हो जी।
बेद कतेब पार नहीं पावैं, कहन सुनन से न्यारा हो जी।
जात वर्ण कुल क्रिया नाहीं, नाहीं संध्या नेम अचारा हो जी।।
बिन जल बूंद पड़े जहां भारी, नहीं मीठा नहीं खारा हो जी।
सुन्न महल में नौबत बाजैं, किंगरी बीन सितारा हो जी।।
बिन बादल जहां बिजली रे चमकैं, बिन सूरज उजियारा हो जी।
बिन नैन जहाँ मोती रे पोवै, बिन सुर शब्द उचारा हो जी।।
जो चले जायें ब्रह्म जहाँ दरसै, आगे अगम अपारा हो जी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, बूझे कोई गुरूमुख प्यारा हो जी।।
महरम हो सोए जाणै भाई साधो, ऐसा है देश हमारा हो जी।

ओ अनघड़िया देवा थारी कौन करेगा सेवा।
घड़े देव को सब कोई पूजैं, निश दिन करते सेवा।
पूर्ण पुरुष अखंडी स्वामी, ताका जानै न भेवा।।
दस अवतार निरंजन कहिए, से अपना ना होई।
ये तो अपनी करणी भोगैं, कर्ता और ही कोई।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर कहिए, इन सिर लागी काई।
इनके भरौसे कोए मत रहियो, इन्हू न मुक्ति पाई।।
जोगी, जपी, तपी, सन्यासी आप आप न लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, शब्द लखा सोई तरिया।।

भक्त भजन तै ऊबरै, रखियो जी ईतबारा।
साध–संगत तै ऊबरै,रखियो जी ईतबारा।।

सत पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वा की डारा।
त्रिदेवा सब शाखा भये रे पत्ते संसारा।।
ब्रह्मा ने वेद बनाए, शिव ने योग पसारा।
विष्णु ने माया रची रे, सब उरला ही व्यवहारा।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश की, इन तीनों की मंडी।
ये साहेब के चोरटे, चौथी एक रंडी।।
नीर भये तीनों देवता, मछली संसारा।
कर्मों की फांसी घली रे, उलझ रहा जग सारा।।
सत पुरुष सतलोक है, सबका सजन हारा।
कहै कबीरा धर्मीदास नै, सुमरो एक ही करतारा।।

ऐजी–ऐजी हमने सब जग भूला रे पाया।
इसी भूल में ब्रह्मा भूला जिन ये वेद बनाया।।
वेद पढ़ंता पण्डित भूला, सत वस्तु नहीं पाया।
इसी भूल में शिव जी भूला जिन भीषन पंथ चलाया।
झोली खप्पर लिया हाथ में घर–घर अलख जगाया।।
इसी भूल में मोहम्मद भूला, जिन न्यारा मजहब बनाया।
परतिरिया खातर फिरा भटकता, लिंगी मूंछ कटाया।।
इसी भूल में नारद भूला, ब्रह्मा सुत कहाया।
मोहनी देख के हाका खाया, मुख बंदर का बनवाया।।
इसी भूल में मच्छन्दर भूला, जिन कामरू देश बसाया।
योग युगत की सार न जाना वथा जन्म गंवाया।।
भूल मिटी जब मिटी चौरासी, जब सत्य समझ में आया।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, आपे में आप समाया।।

हमारे एक प्रेमी रहा करता था। मैं उसका नाम तो नहीं लूंगा। वह शब्द गाया करता था। वह शब्द गाते–गाते यूं गाने लग गया कि–

साधो भाई कुत्ती को मारो तीर की।
इस कुत्तिया ने चौका बिगाड़ा थाली बिगाड़ी खीर की।।

यूं कह कर कहता कि **तीर की, तीर की, तीर की।**

बाघपुर की भूवा का लड़का मनसाराम कहता कि इस कुत्ती को ज्यादा ना छेड़ भाई ये काट लेगी। वह कहता कि तेरे जैसे बहुत देखे हैं। अब उसने 60 वर्ष का होकर ब्याह करवा लिया। बाद में बच्चे होने के बाद उसको उस कुत्तिया ने काट लिया। बताओ? दूसरा फिर एक ऐसा प्रेमी आया, जब उससे कोई चीज मांगता तो वह कहता कि क्यों! नहीं देता। मेरा कोई क्या तलाकी लगता है? हम किसी के जंवाई नहीं तो हमारा कौन बनेगा? यह बात मैं कह दिया करता था कि जब हम किसी के जंवाई नहीं हैं तो हम किसको जंवाई बनाएंगे। तो मेरी बात पर वह कहता है कि हम किसी के जंवाई नहीं तो हम किसी को क्यों जंवाई बनाएंगे, उलट–पुलट बात कह देता। मैं कहता था कि तू ऐसी बात क्यों कहा करता है। उसके साथ में ऐसी बुरी हुई कि बेचारे की शादी हो गई और पहले लड़की ही हुई। सो जंवाई का झोला आकर टंग गया। अब सारे सत्संगी उसे कहते हैं कि बोल भाई ! तू क्या कहता था? वह यूं ही कहता है कि भाई ! बस की कोई भी बात नहीं है। सो छेड़ो मत, यह कुतिया काट भी लिया करती है। पर मैंने तो जो बात कही है, यह आपको नहीं कही है। गुरू महाराज का सहारा लेकर कही है। आप लोगों का सहारा है। मेरी मदद तो सत्संगियों ने ही की है। मैं सच्ची बात कहता हूं कि इन ऐबों से या तो मुझे अपने गुरू महाराज ने बचाया या फिर इन सत्संगियों ने बड़ी दया की है। पुराना सत्संगी है भाई रतीराम। इनकी कई बार बातें कहा करता हूं, ये आते जाते रहते हैं। मैं आप लोगों को देखकर कहा करता कि अगर कोई कुछ गड़बड़ भी हो गई तो लोग क्या कहेंगे? सो मालिक की दया थी।

सत्संगियो, माताओ और बहनों, मेरी इज्जत आपने रख दी और भी मेरी इज्जत बनाये रखना। मैंने तो सतगुरू का सहारा लिया था। महाराज जी कहा करते थे कि देखो, **ये लिखा न पढ़ा, और दूध मारे कढ़ा।** क्योंकि मैं पढ़ा लिखा नहीं था, इसलिए महाराज जी यही कहा करते थे कि यह कढ़ा हुआ दूध पीता है और अनपढ़ है। भाई! मैं तो कुछ भी नहीं जानता हूं। मैं तो एक ही चीज जाना था अपने सतगुरू का सहारा।

सतगुरू राजी तो कर्ता राजी।
काल कर्म की लगे न बाजी।।

कई आदमी कह देते हैं कि मैंने सतगुरू की भक्ति कर ली है। सतगुरू की भक्ति करने के बाद तो कोई भी चीज करने वाली बाकी नहीं रह जाती है। सतगुरू की भक्ति तो गुरूमुख ही कर सकता है। सतगुरू की भक्ति करने वाले के आगे दुनिया झुक जाती है। दुनिया ही नहीं खुदा भी झुक जाता है। वह परमात्मा उसके आगे आकर खड़ा हो जाता है। वह अपना नेम तोड़कर उसके पास आकर खड़ा हो जाता है और पूछता है कि बोल क्या करवाना है? अगर उसने अपना नेम नहीं तोड़ा हो तो बता दो। मीरा के लिए जहर आया था उसका अमत बना दिया। कष्ण जी ने नेम किया था कि मैं हथियार नहीं उठाऊंगा। पर हथियार उठाना पड़ गया। आपने सुना है—

राम गुण गावना भक्तां नै आवै सै।
हरि को रिझावना भी भक्तां नै आवै सै।।
कष्ण का था नेम कर में शस्त्र नहीं उठाऊंगा।
भीष्मपिता ने कहा, हरि के हाथ में शस्त्र दिवाऊंगा।।
नेम तुड़ावना भक्तां ने आवै सै।
हाथ में शस्त्र दिवावना भी भक्ता नै आवै सै।।

सो वे परमात्मा के नेम को तुड़वा देते हैं। परमात्मा खुद ही

तोड़ देता है अपने भक्त के लिए। वह किसी के लिए गाड़ीवान बना। किसी के लिए वह पहरेदार बन गया। किसी का कुछ बना। पर वह कब बनता है? जब तुम सतगुरू की भक्ति कर लेते हो तब बनता है। सतगुरू को याद करो तब सब कुछ बन जाता है। तुम सतगुरू को तो याद करते नहीं हो। अपने बुजुर्गों को तो याद करते नहीं हो। उनकी सेवा नहीं करते हो। फिर कैसे क्या बनेगा? एक बार तड़प उठती है, फिर ढ़ीले पड़ जाते हैं। अगर ज्यादा कहते हो तो यह भी कह देते हो कि भाई ! अब का जन्म तो गया आगे देखेंगे। लेकिन आगे का तो कोई पता भी नहीं है भाई! यह तो एक बूंद है। इस बूंद को एक हवा का झोंका लग गया तो पता नहीं कहां गिर सकती है। खारी समुद्र में भी गिर सकती है। आपने वाल्मीक जी की मिसाल तो सुनी होगी। उस पर तो ऋषियों ने दया कर दी और उसको संभाल लिया। **पहले जन्म में वाल्मीक का नाम रत्नाकर था। बताते हैं बड़ा अच्छा आदमी था। उसने ऐसे खोटे कर्म किए कि भीलों के साथ में रहकर भील बन गया। वह वाल्मीक से बालिया भील बन गया। बाद में उसी को वाल्मीक जी कहने लग गये। इतना बड़ा बन गया। ऋषियों की संगत होने से वे सारे ही कर्म ढ़के गए। सो सत्संग से गुण उपजता है और कुसंग से गुण चले जाते हैं।**

सो अच्छा संग किया करो। अच्छी जगह बैठा करो। मालिक की दया है तुम्हारे ऊपर। वह क्या है? तुम तो बड़े भागी हो, कहीं भी आपको जाना ही नहीं पड़ा। मैं तो भागी नहीं था। मुझे तो दो दुख थे—एक तो रोटियों का दुख था और दूसरी मुझे एक तड़प थी कि कोई महात्मा मिल जाए। कोई संत सतगुरू मिल जाए। मैं बहुत घूमा फिरा। जब सतगुरू मिला तो बड़ी दया हुई। पर मैं ऐसा था कि अगर मेरा सतगुरू मुझे किसी बंधन में बांधता तो मैं बंधन में नहीं बंधता। बंधन को तोड़ देता। मेरा ऐसा ही दिमाग था।

उनसे मैंने कहा कि महाराज जी! मुझे बताओ कि मैं किसी के सत्संग में जाऊं कि नहीं। उन्होंने कहा—कहीं भी जा, पगला! क्या पता नहीं है? मुर्गियों को पिटारी में रोकते हैं शेर का बच्चा तो खुला घूमता है। तू संत का बेटा है। कहीं भी घूम तेरी जहां मर्जी हो। और भी खुली करता हूं। मैंने जो बातें बताईं, इनसे भी अच्छी बातें कोई बताता है तो उसे गुरू मान लेना। जाओ। इतनी छूट कौन दे सकता है? मैंने पहले भी उनकी महिमा बताई है। उनकी बड़ी अपार दया थी। मैंने बड़े—बड़े साधु महात्माओं के, हंस, परमहंसों के, संतों के दर्शन किए। पर मैंने किसी से कुछ भी नहीं मांगा। एक ही चीज मांगता था कि अगर तू परम संत है, साधु है तो मुझे संसार में फिर न भेजना। आने न देना। जब मैं महाराज फकीर चन्द के पास गया और यह विनती की तो उन्होंने कहा—संत ताराचन्द! तू और मैं इस संसार में फिर नहीं आएंगे। अपना काम पूरा हो चुका है। मैंने कहा—लो विनती सुन ली संतों ने। सो संतों की और सतगुरू की अपार दया होती है। मेरे गुरू महाराज ने कहा था कि मेरा काम पूरा हो गया है। तू तो मेरी मदद के लिए आया था। तेरा काम पूरा हुआ। मुझे तो पूरे, अधूरे का पता नहीं है। आप लोग बुला लेते हो तो मैं आ जाता हूं। दो घड़ी सत्संग कर देता हूं। यह मेरी ड्यूटी है। गले पड़ा ढ़ोल बजाता हूं। मुझे पता नहीं है गलत कहता हूं या ठीक कहता हूं। गलत कहूं तो सतगुरू का है ठीक कहता हूं तो सतगुरू का है। उन्हीं का है। मेरे पास तो कुछ नहीं है।

भीख मंगाई तो मेरा क्या घट जाई।
राज दिवाई तो मेरी कौन बड़ाई।।

सच कहता हूं कि मैं तो कोई बात इज्जत की होती है तो कहता हूं कि सतगुरू मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। सब तेरा ही है। जो ऐसा कहता है वह कभी मार नहीं खाता है। जो सतगुरू को

भूल जाते हैं वे कभी बच नहीं सकते। जो लोग अपने घरों में सत्संग करते हैं और सतगुरू का नाम नहीं लेते हैं समझ लो गुरू द्रोही हैं। कभी नहीं बच सकते। जो सत्संग करते हैं और ध्यान, भजन, सुमरन करते हैं परन्तु अपने गुरू का नाम नहीं लेते हैं, उनका सुमरन नहीं करते वे गुरू द्रोही हैं। चाहे वे बीस—बीस घंटे माला फेरते रहो।

सावण सिंह जी भी लिखते हैं कि 20—20 घंटे भजन करो। परन्तु उनका कोई भजन नहीं बनेगा। बनेगा तो काल का बनेगा। अहंकारी बन जाएंगे। अहंकार में फंसकर मर जाएंगे। संत तो दीनता ही सिखाते हैं। प्रेम सिखाते हैं। प्रेम से ही हम उस घर में पहुंच सकते हैं। आपने सुना है—

ये तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
शीश काट पग तलै धरै, तब पहुंचे घर माहिं।।

जहां प्रेम नहीं है उस जगह पर कुछ भी नहीं है। प्रेम सब से बड़ी चीज है। आपने सुना है—

जोगी जंगम सेवड़ा, सन्यासी दरवेश।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं, सतगुरू दुर्लभ देश।।

बिना प्रेम तो उस घर में पहुंच ही नहीं सकता है। सालिगराम साहब ने भी यही लिखा है—

अगर जाना है तो प्रेम की रेल में बैठ लो पहुंच जाओगे। प्रेम के बिना कुछ भी नहीं है। पता नहीं कितने प्रेम के ही गीत गाते हैं।

दादू पांति प्रेम की, विरला बांचै कोय।
वेद शास्त्र पुरान पढ़ै, प्रेम बिना क्या होय।।

दादू जी भी कहते हैं कि प्रेम बिना कुछ भी नहीं है। कितने ही वेद शास्त्र पढ़ते हैं। फिर भी उनमें प्रेम नहीं है। इसीलिए इन मजहबी लोगों के बुरे हाल हो जाते हैं। वे मजहबी लोग दूसरों की

निंदा करना शुरू कर देते हैं। जो धर्म को समझ जाते हैं। वे किसी की निंदा नहीं करते। ब्रह्मनेष्ठा जो महात्मा होता है, उसे सब ही ब्रह्म का रूप दीखते हैं। जो गुरू का प्यारा होता है उसे सब जगह गुरू का ही रूप दीखता है।

आप और मिसालें ले लो। तुम पानी में गोता मारो और वहां आंख खोलो तो पानी के जानवर दिखाई नहीं देंगे। वहां तो पानी ही पानी दिखाई देगा। इसी तरह शब्द में लीन हो जाओगे तो सब जगह गुरू ही गुरू दिखाई पड़ेगा। ब्रह्मनेष्ठा को सब जगह ब्रह्म ही ब्रह्म दिखाई देगा। आप कहोगे कि आप एक बार गुरू कह देते हो और एक बार ब्रह्म कहते हो। अरे! गुरू भक्ति होती है। यह गुरू भक्ति भी ब्रह्मलीन महात्मा की तरह से होती है। जब तुम करोगे तो पता लगेगा। उसे ब्रह्म दिखाई देता है तो उसे सतगुरू दीखता है। पर ये जो बातें बताईं हैं इनसे तो आगे चलना पड़ेगा। यह भी बता देता हूं। कभी इसी में फंसकर बैठ जाओ। इसमें फंस कर बैठ गए तो वही होगा जैसे महात्मा कहते हैं कि जिसका हरिद्वार में प्यार है तो हरिद्वार की मछली बनोगे। तुलसी दास जी बड़ी सुंदर मिसाल देते हैं।

जहां आसा, वहां बासा।

यह बात जरूर है कि जिसका गुरू से प्यार है और उसका रूप प्रगट हो गया तो वह चौरासी से बच जाएगा। काम पूरा नहीं हुआ है। काम पूरा फिर बनेगा। पूरा कब बनेगा? गुरू का रूप लेकर जब हम शब्द में समा जाएंगे तब रूप रेख सब खो जाएंगे।

हिल मिल खेलूं शब्द में अंतर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पण्डित क्या शेख।।

सारी दुनिया का मत एक ही है। पर ये बेचारे भूल गए हैं। अपना रास्ता भूल गए हैं। इनको कौन क्या कहे? कौन इन्हें समझाए? कई—कई बातें ऐसी आती हैं, फिर पर्दा डाल देते हैं।

कबीर साहब ने भी पर्दा डाल दिया। आप हर वक्त वाणी सुनते हो। कबीर साहब की बाणी है। मेरी नहीं है। जब धर्मदास उसके पास आया तो उसने कहा कि महाराज! वह नाम बताओ। सभी नाम बता कर फिर राधास्वामी नाम बताया—

कबीर धारा अगम की सतगुरू देई बताय।
ताहिं उलट सुमरन कर स्वामी संग मिलाय।।

धर्मदास ने कहा—मैं समझ गया। कबीर साहब ने कहा—तू समझ गया है तो—

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, ये सार भेद बाहर न जाई।

बोलो यह कबीर जी की वाणी है या नहीं? इसीलिए वे लोग आगे भूलते चले गए। उन्हें मंजिलों का पता नहीं है। कोई बाहर के ध्यान में ही रह गया तो कोई अन्तर में चला गया। कह देते हैं कि वहां पर स्थान आदि कुछ नहीं है। मैंने एक गुरू से बातें की। पर मैं उसका नाम नहीं लेता। मैंने कहा—तू डूब जाएगा। मैंने पूछा—वहां क्या मिलता है? उसने कहा—वहां तो नूर है। तेज पुंज में चले जाते हैं। मैंने कहा—तेज पुंज तो पहले आ जाता है। फिर तेज पुंज भी बहुत विस्तत है। वह कौन सा तेज पुंज है? उसने कहा—मैं स्थानों की बातें नहीं करता हूं। हम तो सीधे जाते हैं। मैंने कहा—यह गलत है। कोई दिल्ली जाता है और गांवों का पता नहीं है कि दिल्ली किधर है। अगर वह लुहारू की तरफ चल देगा तो दिल्ली कब आएगी? शर्म आनी चाहिए। संत सतगुरू तो रास्तों को बताता है। इसीलिए उसको रहबर (पथ प्रदर्शक) कहते हैं। रास्ता बताने वाला रहबर ही अगर गलत है तो मारा जाएगा। जिसका ड्राईवर कमजोर है या गलत है तो पता नहीं किस जगह फंसा देगा और कहीं भी टक्कर मार देगा और मरवा देगा। इसीलिए स्वामी जी महाराज कहते हैं—

चेतो मेरे प्यारे तेरे भले की कहूं।।
गुरू तो पूरा ढूंढ़ तेरे भले की कहूं।।
शब्द रता गुरू देख तेरे भले की कहूं।।
तिस गुरू सेवा धार तेरे भले की कहूं।।
गुरू चरणामत पीव तेरे भले की कहूं।।
गुरू परशादी खाव तेरे भले की कहूं।।
गुरू आरत कर ले तेरे भले की कहूं।।
तन, मन भेंट चढ़ाव तेरे भले की कहूं।।
बचन गुरू के मान तेरे भले की कहूं।।
गुरू को कर प्रसन्न तेरे भले की कहूं।।
नित भजन कर नेम तेरे भले की कहूं।।
जीव दया तू पाल तेरे भले की कहूं।।
दुख न दे तू काय तेरे भले की कहूं।।
वचन तान मत मार तेरे भले की कहूं।।
कड़वा तू मत बोल तेरे भले की कहूं।।
सब को सुख पहुंचाय तेरे भले की कहूं।।
नाम अमीरस पीव तेरे भले की कहूं।।
सील छिमा चित राख तेरे भले की कहूं।।
संतोष विवेक विचार तेरे भले की कहूं।।
काम क्रोध को त्याग तेरे भले की कहूं।।
लोभ मोह को टार तेरे भले की कहूं।।
दीन गरीबी धार तेरे भले की कहूं।।
संतों से कर प्रीत तेरे भले की कहूं।।
सतगुरू पूरा खोज तेरे भले की कहूं।
पिछलों की तज टेक तेरे भले की कहूं।।
भोजन बहुत न खाव तेरे भले की कहूं।
सत्संग में तू जाग तेरे भले की कहूं।।

मान बड़ाई छोड़ तेरे भले की कहूं।।
तू नींद भर मत सो तेरे भले की कहूं।
राधास्वामी नाम धियाव तेरे भले की कहूं।।
अटक भटक सब तोड़ तेरे भले की कहूं।।
टेक पक्ष गुरू बांध तेरे भले की कहूं।।

।। राधास्वामी।।

आगामी मास का सत्संग

2 जुलाई शुक्रवार (गुरु पूर्णिमा) भिवानी

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

जून/जुलाई मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	सिचावली	21 जून-27 जून
2	दादरी	28 जून-4 जुलाई
3	सिवानी	05 जुलाई-11 जुलाई
4	हिसार	12 जुलाई-18 जुलाई
5	हांसी	19 जुलाई-25 जुलाई

एक दृष्टान्त

महर्षि शिवव्रत लाल जी

पन्द्रह आदमी नदी के पार जा रहे थे। जब वे नदी के घाट आये तो विचार आया कि गिनती कर लें कि कहीं कोई पानी में डूब तो नहीं गया। एक ने गिनती की, कि चौदह तो हैं और पन्द्रहवाँ नहीं है। सब मिलकर शौक मनाने लगे और देर तक रोते रहे। किसी समझदार पुरुष की दष्टि उन पर पड़ी। पूछा कि तुम क्यों रो रहे हो? उन्होंने कहा कि हम घर से पन्द्रह चले थे। चौदह मौजूद हैं, पन्द्रहवाँ डूब गया। समझदार पुरुष ने कहा कि चिन्ता न करो। पन्द्रहवाँ भी मौजूद है।

समझदार ने कहा कि मेरे सामने एक–एक गिनों। उन्होंने गिना मगर गिनने वाला अपने आपको नहीं गिनता था।

तब ज्ञानी ने सबको एक पंक्ति में खड़ा करके गिनना प्रारम्भ किया। एक से लेकर पन्द्रह तक गिन गया। उसने कहा कि तुम पन्द्रह के पन्द्रह मौजूद हो। कैसे कहते हो कि पन्द्रहवाँ खो गया। वह अचम्भे में रह गये। फिर भी सन्तोष नहीं हुआ। तब उस ज्ञानी ने उनसे कहा कि तुम में से प्रत्येक औरों को तो गिनता है, मगर अपने आपको नहीं गिनता। इस कारण से भ्रम है। वे समझ गये। शान्ति मिल गई और खोया हुआ व्यक्ति मिल गया। यह संसार नदी है। पन्द्रह पथिकों में दस कर्म और ज्ञानेन्द्रियाँ है। चार अन्तःकरण मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं और आत्मा पन्द्रहवाँ है। इस भव सागर के इस और आकर सबको गिनता है। सबका ज्ञान तो प्राप्त करता है, मगर अपना ज्ञान उसे नहीं होता। यही असली बेचैनी का कारण है।

समझदार पुरुष गुरु है जो अपनी विवेक की शक्ति देकर ज्ञान देते हैं। तब भ्रम और अशान्ति दूर हो जाती है।

अनमोल वचन

- काम में आत्मा नीचे को गिरती है, क्रोध में फैलती है और अहंकार आत्मा को ऊँचे मण्डलों में जाने से रोकता है। – *संत कबीर साहिब*
- तुम बड़े आडम्बर के साथ "पवित्र" नदियों में स्नान करते हो, पर अन्दर मन पर जो मैंल की तहें जमी हुई हैं उसकी ओर ध्यान नहीं देते। – *संत तुलसी साहिब*
- पल में तोला और पल में माशा होने वाले क्षण भर में गंगादास, जमनादास होने वाले शिष्य, गुरु पीर के भी नहीं होते हैं और वे अपने परिवार के भी नहीं होते हैं। – *संत कंवर सिंह जी महाराज*
- सन्तमत सब मतों का शिरोमणि है, और उनकी जान की जान है। यही सच्चे मालिक का सच्चा मत है। सच्ची मुक्ति इसी से होगी और कोई मत इसके निमित्त रचा ही नहीं गया।

–स्वामी जी महाराज

ज्ञान-सार

- जो अपनी चीज है, उसका अभिमान नहीं होता और जो चीज अपनी नहीं है, उसका भी अभिमान नहीं होता। अभिमान उस चीज का होता है जो अपनी नहीं है, पर उसको अपनी मान लिया।
- अभिमानी आदमी से सेवा तो कम होती है, पर उसको लगता है कि मैंने ज्यादा सेवा की। परन्तु निरभिमानी आदमी को पता तो कम लगता है, पर सेवा ज्यादा होती है।
- जब तक स्वार्थ और अभिमान है, तब तक किसी के भी साथ प्रेम नहीं हो सकता।

भिवानी 2-5-2004

ब्रह्माण्ड की लख चौरासी योनियों में एक मात्र मानव योनि ही, चोला ही ऐसी योनि है जिसमें सत्संग और नाम प्राप्त हो सकता है। जिस समय जीव को सत्संग और नाम सुमरन के महत्त्व की समझ आ जाती है, तो उसका जीवन, जीविका और उद्देश्य बदल जाते हैं। जीव नाम के सुमरन से अपने जन्म–मरण सहित सभी कष्टों को दूर कर लेता है। परन्तु अपने जिस सांस में वह नाम के सुमरन को गफलत अपनी किसी से भुला देता है उसी सांस में काल महाराज इस को अपने चंगुल में फंसा लेता है। मुसलमान, पीरों, फकीरों ने इसी बात को यू रखा है।

जो दम गाफिल; सो दम काफिर।

कबीर साहब ने भी इसी विचार को अपने निम्नलिखित दोहे में इस प्रकार व्यक्त किया–

सतगुरु माथे से उतरे, शब्द बिहूना होय।
ताको काल घसीटसी, बचा न सके कोय।।

सतगुरु तथा नाम के माथे से उतरते ही जीव को कोई भी शक्ति काल महाराज के दुखों–सन्तापों से उसकी रक्षा नहीं कर सकती है। अतः नाम का सुमरन जीव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हुजूर महाराज जी ने नाम सुमरन की तीन सीढ़ियां बताई। जीव अपने मुख से नाम का सुमरन करता है, जिसे दूसरे जीव भी सुन सकते हैं इसको जाप कहा जाता है। जाप में तल्लीन होने पर मुख का सुमरन यानि जाप बन्द हो जाता है तब उसका स्वतः ही कण्ठ का सुमरन चालू हो जाता है। इस सुमरन को अजाप अथवा अजपा जाप कहते हैं। जीव का नाम में सुमरन में पूर्ण तल्लीनता होने के बाद उसका हृदय का पूर्ण मग्नता प्रदान करने वाला जाप प्रारम्भ हो जाता है।

इसी को सन्तों ने अनहदनाद का नाम दिया है। काल महाराज के चंगुल से छुटने के लिए जीव को अनहदनाद से भी आगे की गति प्राप्त करनी पड़ती है। कबीर साहब कहते हैं कि–

जाप मरे, अजपा मरे, अनहद भी मर जाय।
सुरत समानी शब्द में, ताहीं काल नहीं खाय।।

जीव को ऐसी गति सतगुरु की विशेष दया–मेहर से ही प्राप्त हो सकती है, जब कि वह जन्म मरण सहित सभी संसारी दुखों से पीछा छुटवा सकता है। अन्यथा तो काल महाराज साधारण प्रलोभनों से उसे जाप भी नहीं करने देता है। अतः उसके जीवन, जीविका और उद्देश्य में किसी सुधार के स्थान पर अधोगति दष्टि गोचर हो जाती है जैसे कुछ जीव नाम की बख्शीश प्राप्त करते ही दो चार शब्द सीख कर इकतारा उठाकर गाना बजाना शुरू कर देते हैं और गुरु बन बैठते हैं। इस प्रकार लोग गुरुवाई को एक सस्ता धन्धा बना लेते हैं। वे सन्तमत पर कलंक बन जाते हैं। साधारण इस प्रकार से वे स्वयं ही नहीं डूबते बल्कि दूसरे जीवों को भी डुबाने का काम करने लग जाते हैं।

कबीर साहब ने तो अपने पुत्र कमाल को नाम का ऋद्धियों–सिद्धियों में दुरुपयोग करने के लिए बुरी तरह से लताड़ दिया था। कहते हैं कोई कोढ़ी यह सुनकर उनके घर पहुंच गया कि यदि कबीर साहब उसको अपना शुभ आशीर्वाद दे दे, तो उसका कोढ़ दूर हो सकता है। उस समय कबीर साहब घर पर नहीं थे। कमाल ने कोढ़ी की कथा–व्यथा सुनकर नाम का सुमरन करके उसको आशीर्वाद दे दिया और उस कोढ़ी का कोढ़ तत्काल ही दूर कर दिया। जब कबीर साहब ने कमाल की इस घटना का पता लगा तो उन्होंने बड़े खेद के साथ कमाल को लताड़ते हुए कहा कि–

डूबा वंश कबीर का, पैदा हुआ पूत कमाल।
कोढ़ी बदले ला दिया, नाम अमोलक लाल।।

आज की स्थिति तो ऐसी है कि सत्संगी नाम को कोढ़ के बदले नहीं वरन कौड़ी के बदले में लगा कर अपने जीवन को सुधारने के स्थान पर और अधिक बिगाड़ लेते हैं।

"परम पुरुष पूर्ण धनी हजूर महाराज जी राधास्वामी! मैं राजवीर पूर्व सरपंच सामण, तह. महम, जिला रोहतक सतगुरु की दया मेहर का वर्णन लिखता हूं जो इस प्रकार है। मैंने आज से लगभग 5 वर्ष पहले ऊपरवाली बाईं–साईड की जाड़ निकलवाई थी। उस जाड़ के निकलवाने से मेरा नाक का सुराख मसूडे की तरह मुँह में खुल गया। इससे दर्द के साथ–2 मुझे बोलने व सांस लेने की कठिनाई के अतिरिक्त अचानक मत्यु की स्थिति बन गई। मैंने फरवरी 2000 में रोहतक मैडिकल के ई.एन.टी. विभाग के सबसे बड़े डाक्टर एस.पी.एस. यादव से आप्रेशन करवाया लेकिन आप्रेशन फेल रहा। फिर मैंने दूसरी बार अगस्त 2001 में फिर रोहतक मैडिकल में डा. यादव से ही आप्रेशन करवाया। लेकिन फिर भी वो सुराख बन्द नहीं हुआ। 9 मार्च 2004 को मैं हजूर महाराज जी के पास दिनोद आश्रम में आया तो महाराज जी ने मेरे को सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया कि अब फिर मेडिकल रोहतक में यही आप्रेशन करवाना, ठीक हो जाओगे, मालिक तेरी मदद करेगा।

11 मार्च 2004 को डाक्टर एस.पी.एस. यादव ने मेरे को पूरा बेहोश करके आप्रेशन किया। आप्रेशन करवाते समय मुझे हजूर महाराज कंवर जी ने दर्शन दिये और कहा कि भाई तेरा मरने का टाइम तो जा लिया, अब तो तुम बिल्कुल ठीक हो और अब यह बीमारी भी नहीं रहेगी। आप्रेशन करवाते समय जब आप्रेशन चल रहा था, मेरा भाई सुरेश, डाक्टर द्वारा मंगवाई गई दवाई लेकर पहुंचा तो डाक्टर ने कहा कि इसका तो सुराख बहुत ही चौड़ा दिखाई दे रहा है। इसलिये बन्द नहीं होगा। डाक्टर ने 4 दिन के बाद बहुत ही उदास चेहरे से मेरी छुट्टी कर दी और यह कहा कि यदि तेरा मालिक पर विश्वास है तो तुम ठीक हो जाओगे।

फिर मैं 10 दिन बाद मेडिकल में चैकअप करवाने गया तो डाक्टर मेरा अन्दर से चैक अप करके हैरान रह गया।

फिर डाक्टर साहब मुस्कराये (हंसे) और कहा कि राजबीर तेरे ऊपर मालिक की बहुत बड़ी दया है। मुझे तो बिल्कुल ही विश्वास नहीं था कि तुम ठीक हो जाओगे, क्योंकि इतना चौड़ा सुराख मैंने पहली बार देखा था। यह सुराख बन्द होने का नहीं था। यह तो तेरे भगवान ने ही ठीक किया है। अब मैं मेरे सतगुरु महाराज जी की दया से बिल्कुल ठीक हूं। जो महाराज जी ने मेरे ऊपर दया की इसका मैं सदैव–सदैव सतगुरु महाराज जी का आभारी रहूंगा। दया तो मेरे ऊपर और भी बहुत की हैं, जिनका ऋण (कर्ज) मैं चाहे कुछ भी कर लूं पर मेरे से उतर नहीं सकता है।"

राजवीर, पूर्व सरपंच
गांव/पो. सामण,
तह. महम, जिला रोहतक

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

जीवन-दर्शन

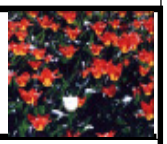

एक सज्जन साइकिल पर चढ़कर कहीं जा रहे थे। साइकिल सड़क के बीच में थी। पीछे से एक ट्रकवाला आया और ट्रक रोककर बोला "अरे ! बीच में क्यों चलते हो? या इस तरफ चलो, या उस तरफ। सज्जन को चेत हो गया कि जीवन में भी मैं ऐसे ही बीच में चल रहा हूँ, अब एक तरफ हो जाना चाहिए। वे सब कुछ छोड़कर साधु बन गये।" ✸